परमपूज्य माताजी श्री निर्मलादेवी

श्री महाविराट पूजा, न्यूयार्क, 11 जून 1989
§संकलित अंश§

श्री महाविराट पूजा, श्री कृष्ण की भूमिपर, श्री माताजी को महाविराट के रूप में पूजने का यह हमारा सुअवसर था। श्री विष्णु का सबसे महत्वपूर्ण अवतार "विराट" रूपमें है। श्री माताजी ने हमें समझाया कि अपने मस्तिष्क के अन्दर श्री विराट की पूजा करने का यह अवसर है क्योंकि श्री कृष्ण ही महाविराट है। हमारे मस्तिष्क की सम्पूर्णता ही विराट है परन्तु यथार्थता हमारे हृदय में निवास करती है। यह यथार्थता ही सम्पूर्णता की सूक्ष्मता है। हृदय और मस्तिष्क की एक जुटता न होना भयानक है, अगर मस्तिष्क का पोषण हृदय से नहीं होता है तो मनुष्य बहुत बाह्य-व्यस्त §इक्सटोवर्ट§ और निर्दयी हो जाता है। जब §सिर्फ§ हृदय का शासन हो तो मनुष्य सुद-व्यस्त और आलसी बन जाता है।

श्री माताजी ने कहा कि यह बड़ा और विशाल देश जो की खोजी लोगोंसे भरपूर है अब नकारात्मक शक्तियों के जाल में फँसा हुआ है। यहां के निवासियों का जीवन अधर्म, निरर्थक चपलता, दिखावेपन से भरपूर एवं अर्थहीन है। उन्होंने समझाया कि अमेरिका और दूसरे पाश्चात्य देशों मे बायीं ओर §इड़ा नाडी की क्रियाशीलता§ दायीं तरफ से अत्यधिक कार्यशील है। यह प्राचीन काल में पाश्चात्य लोगों द्वारा की गई शासन §प्रभुत्व§ की एक प्रतिक्रिया है। परिणाम स्वरूप उन लोगों ने आलसीपन को अपनाया है। अधिक सम्पन्नता भी सुद-व्यस्तता को जन्म देती है जो कि लोगों को वास्तविकता के प्रति अंधा बना देती है। यथार्थता हृदय में होने के बावजूद कार्यों द्वारा व्यक्त होनी चाहिए। इसे कार्यवान्वित करने के लिए हमें और ज्यादा गतिमान बनना चाहिए।

श्री माताजी ने समझाया कि आत्मसाक्षात्कार के पहले के हमारे संस्कार अब भी हममें खत्म नहीं हुए हैं बल्कि वे और अधिक सूक्ष्म हो गये हैं। हमारे संकीर्ण विचारों और छोटी-छोटी व्यक्तिगत समस्यायों में उलझने के कारण हम एक बड़े जाल में फँस जाते हैं। "विराट" बनने के लिए हमे बिना किसी क्रोध या डाह के, स्वयं को पूर्णरूप से जाँचना होगा" और स्वयं की वृध्दि के लिए कुछ करने का निर्णय लेना होगा। हम ये कह सकते हैं हम माँ से प्यार करते हैं

परन्तु हम, इसके लिए क्या कर रहे हैं?

एक बार हम स्वयं को अन्दर से बनाना शुरू करें तो सब कुछ आश्चर्यजनक तरीके से घटित होने लगेगा और सहजयोगी बहुत महान बन जाएंगे। बाह्य जगत में भी सहजयोगियों को कुछ बनकर दिखाना होगा, उनका शिक्षित होना आवश्यक है तथा समाज में भी उनका {आदरणीय} स्थान होना जरूरी है। श्री माताजी ने जोर देकर कहा की अमेरीका में सहजयोगियों को दांय पक्षी {राईट साइडेड} होने का भय त्याग देना चाहिए, जो आलसीपन की तरफदारी करने का सिर्फ एक बहाना मात्र है। परन्तु उनमें अनुशासन होना चाहिए, जल्दी उठना, स्नान करना, पूजा करने के लिए बैठना, जीवन के तौरे तरीकों को बदलना चाहिए एवं वीर की भाँति गतिशील जीवन जीना चाहिए।

श्री माताजी ने कहा कि इंग्लैण्ड और अमेरीका के ज्यादातर सहजयोगी शिथिल हैं और सहजयोग को फैलाने का उत्तरदायित्व अपने कंधो पर लेना नहीं चाहते। उन्होने कहा, "यहीं पर तपस्या है, जहाँ हम रहते हैं। यहीं पर हमें वैराग्य {डिटैचमेन्ट} को कार्यान्वित करना है।" हमें श्री माताजी के पदचिन्हों पर चलना चाहिए और सहज योग के लिए कड़ी मेहनत करनी चाहिए। हमें अपने पुरातन संस्कारों को उसी तरह से त्यागना चाहिए जिस तरह से एक फूल फल बनते समय अपने विभिन्न अंगों को त्यागता है। यह हमें सम्पूर्ण दिव्य ज्ञान को स्वतंत्र रूप से देखने की क्षमता प्रदान करता हैं। इसके लिए हमें किसी चीज को त्यागने की आवश्यकता नहीं है, केवल सहजयोगी के रूप में अपनी अवस्था के प्रति सचेत और जागृत रहना हैं। "प्रत्येक व्यक्ति को ऊपर उठना हैं।"

उन्होंने हमसे सहजयोग के विषय में और खुलकर बात करने का अनुरोधकिया। सहजयोगियों को उन सामाजिक नेताओं से सम्पर्क बनाना चाहिए जिनके उचित विचार हैं। परन्तु यह आवश्यक है कि सहजयोगी सहजयोग के सुन्दर और मोहक गुणों को प्रतिबिम्बित करें ताकि संचार पूर्ण रूप से कार्यान्वित हो सके। हमें यह ज्ञात होना चाहिए कि हम सहजयोग पर कोई उपकार नहीं कर रहे है, अपितु हर एक व्यक्ति को अकेले और सामूहिकता में सहजयोग की जरूरत है। श्रीमाताजी ने कहा कि प्रत्येक सहजयोगी के पास उनके {भाषण की} बहुतसी "टेप" होनी चाहिए ताकि वे उसे समझ सके और अपने आप को उस ज्ञान की स्वतंत्रता में ढाल सके।

उन्होने अनुरोध किया कि हम सब अपने हृदय से प्रार्थना करे कि "हम उस तथ्य को जो कभी विराट था अपने जीवन में यथार्थता के रूप में प्रकट कर सके"। मौलिक अमरीकी धार्मिक जीवन बीताना जानते थे। वे बहुतही स्वतंत्र और वैराग्यवृत्ति {डिटैचटड} के थे।

अगर हम स्वयं को न सुधार सके तो सामूहिक स्तर पर समस्याएँ खड़ी हो जाएगी, अगर सामूहिकता में समस्याऐं है तो वे संपूर्ण अंगो पर {समाज के} अपना प्रभाव प्रतिबिम्बित करेंगी। हम सब को विराट बनना है, अपनी योग्यता जताने के लिए तथा अधिक गहराई में जाने के लिए जिससे अपने को तथा इस देश {समाज} को बदल सकें।

श्री महाकाली पूजा भाषण

कैन्कोवर, 17 जून 1989

महाकाली तत्व सबसे पहले इस पृथ्वी पर आयीं उन्होने श्री गणेश का निर्माण किया। फिर श्री महासरस्वती ने एक सुन्दर सृष्टि की रचना की और मनुष्यों के लिए बिल्कुल उपयुक्त तापमान बनाया। जलवायु ने लोगों के खोजने की शक्ति को प्रभावित किया है, भारत का तापमान ध्यान-धारणाके लिए उत्तम है और सत्य खोजनेवालों के लिए एक अच्छा वातावरण प्रदान किया, जिन्होनें सत्य को पहचाना और कुंडलिनी की खोज की।

इन लोगों ने फिर अलग-अलग होकर विश्वविद्यालयों की शुरुआत की। 5 साल की उम्र होने पर बच्चों को पाठशाला में भेजा जाता था। पाठशालाओं में छात्रों ने ब्रह्मचर्य जीवन का निर्वाह किया। यह परम्परा आज तक निभाई जाती रही है। भारत में एक ही विश्वविद्यालय के विद्यार्थी शादी नहीं कर सकते थे। इस तरह मूलाधार को शक्तिशाली रखा गया, जबकि दूसरे देशों में इस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया गया।

जिन लोगों का मूलाधार कमजोर है उन्हे जल्दी "पकड़" होती है। इसी कारण सारे झुठे गुरू पाश्चात्य देशों में आये और बहुत सफल हुए परन्तु अब ज्यादातर ये लोग नष्ट किये जा चुके है। हमारे भीतर की महाकाली शक्ती ही हमें प्रबल बनाती है क्योंकि वह ही श्री गणेश है। श्री गणेशजी के भाव, जैसा कि कार्बन अणु में दर्शाया गया है, स्वास्तिक और ओंकार है। जब स्वास्तिक घड़ी जैसा चक्कर करती है तो निर्माण होता है और जब वह घडी के विपरीत घूमती है तो विघटन होता है। श्री माताजी ने कहा कि पाश्चात्य देशों में मूलाधार व्यभिचार के कारण घड़ी के विपरीत दिशा में चक्कर कर रहा है। श्री माताजीने कहा कि पाश्चमी देशोंमें मुश्किल यह है कि लोग सुनना ही नहीं चाहते कि उन्हे नैतिक होना चाहिए। अनैतिकता का परिणाम "एडस्" और दूसरी बिमारियाँ है जिनसे वे लोग सीख रहे हैं परन्तु वे यह स्वीकार नहीं करना चाहते है कि उन्होने गल्ती की है। फिर भी, क्योंकि वे सत्य खोजी है, उनकी रक्षा करनी है।

सहजयोग कोई तीव्र आनन्ददायक अनुभव नहीं है जो आपके भीतर किसी द्वारा आत्मा डालने से होता है। उसे तो धीरे धीरे उन्नत होना है। हमे निराश नही होना चाहिए अपितु स्वयं से संतुष्ट और पूर्ण विश्वस्त महसूस करना चाहिए। सहजयोग के लिए उत्तम योग्यता के व्यक्तियों की जरूरत है, ऐसे संत ही किसी देश के लिए सौभाग्य लाते है। हमे ध्यान धारणा तथा सामूहिक वार्तालाप द्वारा गहनता में वृध्दी करनी चाहिए। श्री माताजीने कहा कि अति महान कार्य होना चाहिए। नकारात्मक व्यक्तियों को प्रयंक किया जा रहा है। परन्तु हमें नकारात्मक निराशाबाद को भी अपने अन्दर नही आने देना चाहिए। अगर कुछ उत्तम योग्यता के व्यक्ति कार्यक्रमों मे आये तो यह हजारो §साधारण§ मनुष्यों के अनुभवोंसे ज्यादा उपयोगी होंगे। श्रीमाताजीने हमें बहुत शक्तिशाली गणेश शक्ति के लिए प्रार्थना करनेको कहा है। यह शक्ति हमारी नकारात्मक शक्ति को नष्ट कर देगी।

श्री महाकाली पूजा, सेनडियागो, 19 जून 1989

सम्पूर्णतया श्री महाकाली आदिशक्ति की प्रतिबिम्ब है। वे सर्वशक्तिमान सदाशिव की इच्छा शक्ति है। हम सहजयोगियों को यह समझना चाहिए कि उन्ही की शक्तियों के कारण हम किसी भी चीज की अभिलाषा कर सकते है। हमें यह इच्छा करनी चाहिए की सारी नकारात्मक शक्तियाँ जो हमारे उत्थान के विरोध मे है, उनका नाश हो ताकि श्री महाकाली हमारे उत्थान के निर्माण कार्य को जारी रख सके। उन्हे दैवी निर्माण कार्य के विरूध्द काम करनेवाली शक्तियों का विनाश करना है।

श्री माताजी ने हमे बताया कि हर सुबह ध्यान के वक्त सहजयोगियो को श्री गणेशजी का नाम §जैसे श्री गणेश अथर्व या 108 नाम § दोहराना चाहिये जो श्री महाकाली की शक्ती है। हमे कहेना है "मेरी इच्छा क्या है? यही मेरा लक्ष्य है" इस तरह के अभ्यास से हमारी शुध्द इच्छा बढेगी और केन्द्रित होगी। उन्होने यह भी कहा कि अधमने लाग सहजयोग को कार्यान्वित नही कर सकते क्योंकि सहजयोगियों में निम्नलिखित 4 गुण होने चाहिए।

§1§ साहस §2§ गहन इच्छा

§3§ ज्ञान §4§ मंगलकरण

उन्होने समझाया कि हमें अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण रखना चाहिए। सहजयोगी बनने के उपरांत हम अधिक स्नेही बन जाते है परन्तु पश्चिम में भी, जहाँ लोग अपने परिवारों पर अधिक महत्व नहीं देते, केवल अपने और अपने परिवार के बारे में सोचते है, कारणवश वे स्वार्थी बन जाते है। इस स्वार्थपरता से ध्यान हलका पड़ जाता है और लोगों को अपने उत्थान के प्रति अधमना

{हाफहारटेड} बना देता है। उन्होने बताया कि किस तरह बच्चों पर देश या धर्म के संस्कारो की मुहर लग जाती है, जिससे गलत निशानी स्थापित हो जाती है। इससे दूसरे संस्कारवालोंसे अलगाव की भावना उत्पन्न हो जाती है। हम समाज के रीतिरिवाजों को स्वीकार कर लेते है जिससे संस्कार बन जाते है। इस कृतिमता के प्रति क्रिया स्वरूप ऊपर उठने की शुध्द इच्छा एवं संस्कारों पर विजय पाने की इच्छा हमारे अन्दर जागृत होती है।

उन्होने जोर देकर कहा कि आत्मसाक्षात्कार प्राप्त होने के लिए हमे महाकाली शक्ति को विकसित करना होगा ताकि उन सभी बाधाओं का, जो हमे आत्मा बनने से रोकती है, नाश हो सके। हमारे भीतर छः शत्रु है और श्री महाकाली उन सभी का नाश करती है परन्तु हमें यह देखना है कि हम उनसे चिपके हुए नही रहते। हमारे में यह भावना होनी चाहिए कि "हम वह प्राप्त करना चाहते हैं और वह इसे कार्यवान्वित करने का कार्य कर रही है"। श्री महाकाली हमें शारीरिक और आत्मिक सुख देती है और फिर आनन्द प्रदान करती है। अतः महाकाली शक्ति को शक्तिशाली होना चाहिए। इसके लिए पहले मूलाधार को शक्तिशाली बनना होगा।

जब किसी सहजयोगी की इच्छाशक्ति और नीव मतबूत हो तो इच्छा आकाश में पतंग के उड़ान की तरह डोलती है। हर इच्छा की पूर्ति होती है, शुध्द आनन्द में जब तक कि पूर्ण अनिच्छा की स्थिति प्राप्त न हो जाय, जहाँ किसी अन्य चीज की जरूरत ही की न महसूस हो।

मातृदिवस के दिन माँ का संदेश

सहस्त्रार दिवस एवं श्री बुध्द पूजा के बीच का पूरा सप्ताह, मातृ दिवस की शुभ बधाई का संदेश देने के लिए यू के {इग्लैंड} में श्री माताजी का घर विश्व के सारे देशों द्वारा हजारों पुष्पों से भर गया था। उन्होने कहा कि यह बहुत बड़ा आशिर्वाद है कि पाश्चात्य संस्कारी दुनिया में लोग अभी भी माँ को याद करते है एवं धन्यवाद देते है।

सहजयोगियों द्वारा भेजे गये सुन्दर कार्डो जिन्हे बहुत से सहजयोगी बच्चों ने बनाये थे, को पढकर माँ के नेत्र आँसुओंसे भर उठे। माँ सभी को अलग अलग धन्यवाद देना चाहती थी परन्तु काफी व्यस्त दिनचर्या के कारण हर एक को जवाब नही दे सकी। इसीलए इस अंक के द्वारा सभी को उनका हार्दिक आशिर्वाद एवं धन्यवाद पहुँचाया जा रहा है। सहजयोगियों द्वारा भेजे सभी कार्ड, पत्र, उपहार और फोटो को वे उचित स्थान पर सुरक्षित रख रही हैं जिससे बाद में उनके व्यक्तिगत संग्रहालय में रखा जा सके।

श्रीमाताजी की अमेरिका यात्रा - भाग ।

जैसे अमेरिका की यह यात्रा आरम्भ हुई, अमेरिका सहजयोग के नये परिभाग में प्रवेश किया और श्रीमाताजी ने सभी स्तरोंपर उत्साहपूर्ण भाग लेने की इच्छा की लहर फैलादी,' न्यूयार्क में श्री विराट पूजा के शुरूआत से आत्मसाक्षात्कार सोजनेवालों की संख्या में जिओ-मेट्रिक स्तर पर बढोत्तरी हुई जो यात्रा के दौरान भी जारी रही। सिन्सीनाटी मे· 150 टोरेन्टो में 400, वैन्कोवर में 800 और सेनडियागो में 1600 लोगों ने कार्यक्रम में भाग लिया। सबसे नये केन्द्र मियामी में भी। 150 लोग कार्यक्रम मे शामिल हुए थे। यहाँ तक कि युनाइटेड नेशन्स के 30 राजनीतिक दूतों ने भाग लिया।

श्री विराट पूजा का प्रभाव तुरन्त ही स्पष्ट हो गया जब 4 जुलाई {अमेरिका के 213 वें स्वतंत्रता दिवस} को अखबार में यह प्रकाशित हुआ कि माताजी के यात्रा के दौरान शनि ग्रह के अनूठे चित्र खीचे गये जिनमें शनि ग्रह का रिंग साफ दिखाई देता है। यह पहली बार है कि पृथ्वी से विशुध्दी के ग्रह का फोटो खीचा गया जिसमे सुदर्शन चक्र साफ दिखता है।

श्रीमाताजी विशेष प्रसन्न थी क्योंकि न कि यह पहली बार है कि इस बार देश की सामुहिकता ने इतनी अधिक मात्रा में आगे आई बल्कि योगीजन भी गहराई तथा श्रीमाताजी के साक्षात्कार के नये दौर में प्रवेश कर रहे थे। अमेरिका अब एक समन्वित देश जो अपने आँगन के बाहर झाकने के लिए अपना सिर उठा रहा है तथा तैयारी कर रहा है ताकि सहजयोग की अन्तर-राष्ट्रीय तरक्की में योगदान दे सके।

श्रीमाताजी ने हम सभी लोगों को दृढविश्वासी और साहसिक होने का संदेश दिया और आवहान किया कि सत्य खोजियों तक पहुँचे और उनके संदेश का प्रचार करे। यह हमारा कर्तव्य है कि सारे संसार को यह अवसर प्रदान करें और इसका परिणाम श्रीमाताजी के चरणों में समर्पित करें। हमे नियमपूर्वक गहनता में उतरने के लिए ध्यान-धारणा करना चाहिए और सहजयोग हमारा प्रथम कर्तव्य होना चाहिए। श्रीमाताजी इग्लंड में 16 वर्ष रह चुकी है और जैसा कि विभिन्न चलते केन्द्रो के समाचारों से प्रमाणित होगा कि अब विशुध्दी चक्र को स्वयं रूपांतरित होने का समय आ गया है।

श्री विराट पूजा और सेमिनार

हप्तों की तैयारी के उपरांत, अमेरिका, कनाडा और बाहर के देशों से 150 सहजयोगी बेनटम, कनेक्टीकर में श्री विराट पूजा तथा श्रीमाताजी के दौरे के शुरूआत के लिए एकत्रित हुए और श्री माताजी की अमेरिका यात्रा शुरू हुई। हमसे कइयों का सप्ताहांत न्यूयार्क शहर की तेज

वर्षा के दौरान शुरू हुआ। इस घंघोर तूफान के बीच श्रीमाताजी कनेडी हवाई अड्डे पर पहुँची और आन्दित सहजयोगियो ने उनका स्वागत किया। हवाई अड्डेपर फूल बेंचने वालों का सब फूल उसी क्षण बिक गया क्योकि सहजयोगियो ने श्रीमाताजी का स्वागत फूलों के गुच्छों से किया। जब तक श्रीमाताजी ने नजदीकी न्यूयार्क आश्रम मे आराम किया, सहजयोगियोने कनेक्टीकर में झील के किनारे के शिविर की करीब डेढ घंटे में यात्रा की । प्रत्येक सहजयोगी रातभर भिगोनेवाली वर्षा में, जो कि माताजी व्दारा पूजा की तैयारी और सफाई हेतु भेजी गई थी, उत्साहित रहे

दूसरे दिन जैसे ही सहजयोगी शिविर के बाहर सडकपर एक पंक्ति में श्रीमाताजी के आने के पूर्वज्ञान में खडे हुए, सूर्य ने उनका स्वागत किया। गाते हुए उत्साहित सहजयोगी जिनके आगे एक गाड़ी में संगीतकार बैठे हुए थे, माताजी के कार के सामने नाचते हुए झील के किनारे स्थित निवास स्थनपर पहुँचे। यह शोभा यात्रा अमेरिका में पहले किस्म की थी।

अपने आगमन के कुछ समय उपरांत ही माताजीने उत्तरी अमेरिका के ‘सहज’ नेताओं से मिली। उन्होने बताया कि नये सहजयोगियों का न होना आप लोगों की गहराई की कमी को प्रतिबिंबित करता है। हमें निराश न होने के लिए बताया गया क्योकि श्रीमाताजी ही चित्रकार हैं और हम सब ‘पेन्ट,ब्रुश’ इस नाटक के यंत्र है, पेन्ट, ब्रुश बुरा कैसे महशूस कर सकता है? हमें अपने अन्दर और गहराई में उतरने के लिए प्रोत्साहित किया गया ताकि खोजीजन हमारी एकता में कुंडलिनी की गहराई को महशूस कर सकें और उसके उपरांत अपने अन्दरईश्वर को महशूस कर सकें।

योगियों ने अपने दांई और बांई ओर को साफ करने के लिए गाँ के घर के बाहर ध्यान रखना जारी रक्खा। दोपहर उपरांत अनौपचारिक तौर पर मिलने का मौका मिला और पूजा की तैयारी के लिए हवन का आयोजन किया गया। अमरीकी महिलाओं द्वारा बनाया गये कागज के सुन्दर फूलोंसे सुसज्जित महाकक्ष में संध्या के समय अनेक विभिन्न प्रकार के रंगारंग कार्यक्रम हुए। न्यूयार्क और बोस्टन के सहज योगियों ने अमरीकी भारती गय और कविता संगीत के साथ पेश किया। श्री माताजी ने बताया कि पहले सभी देशों के मौलिक व्यक्ति किस तरह से कुंडलिनी के विषयमें अवगत थे और पहले किस तरह गोरों से काले अबोध अमरीकी भारती व्यक्ति मारे जाते थे। इस प्रोजेक्ट के खोज के दौरान यह पता चला कि वहाँ के मौलिक निवासी अमरीकियों की भाषा में " बनटम " का मतलब है " पूजा का स्थान "

इसके उपरांत न्यूयार्क के बच्चो ने उत्कीर्त को दर्शाते हुए एक आधुनिक नृत्य पेश किया जिसके पश्चात टोरोन्टो की दो बाल योगिनियों ने अपने नृत्य शिक्षिका के साथ पवित्र भारतीय

नृत्य पेश किया। वैन्कोवर के वनीविलिस ने आधुनिक भक्ति संगीत के टेप और विडियो कैसेट प्रस्तुत किये। श्री माताजी ने बतायाकि प्रसिध्द रॉक संगीत सत्य खोजनेवालो की सहजयोग के प्रति जागृत कराने का एक बहुत अछा साधन किस तरह से बन सकता है। उन्होने यह भी बताया कि अमेरिका में सहजयोग को सफल बनाने में "संगीत" एक महत्त्वपूर्ण साधन हो सकता है। कार्यक्रम की समाप्ति सेनडियागो के योगिनियों द्वारा की गई भारतीय नृत्य से हुई, जिसमें प्रत्येक नर्तकी ने श्री माताजी के चरणों पर फूल अर्पण किये। संध्या का समय समृध्द भजन के साथ समाप्त हुआ जिसके पश्चात माताजीने कहा कि उन्हे पृथ्वी की बहुत गहराई से चैतन्य लहरियाँ ऊपर उठती हुई महशूस हो रही हैं।

सुबह जब हम उठे तो सारे शिबिर को तेज हवा झिलोर रही थी। तब घोषणा की गई कि श्री विराटपूजा होगी। पूजा में माताजी ने बताया कि किस तरह अमरीकी मस्तिष्क की कई समस्यायें इस पूजा में समाप्त होगी। उन्होने इस विषय में विस्तृत जानकारी दी कि अभी किस तरह अमेरिका स्वयंग्रस्त और बाई ओर है, उन्होनें इन्गलैन्ड से इसकी तुलना की। यह अनिवार्य है कि अब हम गतिशील कार्य से केन्द्र चलायें। यह भाषण बहुत जोरदार था जिसका सारांश इस अंक मे शामिल किया गया है। श्री माताजी ने जोर देकर कहा कि हर योगीके पास इस भाषण के टेप की एक प्रति होनी चाहिए और इसे वे सुनें। 108 अमरीकी-भारतीय वर्णो के नाम पढे गये जिससे अमेरिकियों पर बाई तरफ के प्रभाव को खतम करने में सहायता मिले जो कि संहार एवं उपेक्षा के कारण भारतीयों की मृत्यु से प्राप्त हुए थे। पूजा के समाप्त होने पर श्री माताजी के चरणोंपर हाथों से बनी हुई चीरोकी मुरेठा अर्पण किया गया। यह कहा जाता है कि श्री माताजी को भारतीयों पर किये गये अत्याचारों के लिए बहुत दुख महशूस हुआ, ऐसा अगाध दुख जिसे प्रकट नहीं किया जा सकता।

इस महत्त्वपूर्ण पूजा के उपरांत माताजी को कई उपहार भेंट किये गये जिसमे अरजोना टरकोईस का बना हुआ एक हार और एब्राहम लिंकन की एक पेंटिग सामिल थी। वहाँ के सहजयोगियों द्वारा बनाई गई कई चित्रकारी भेट की गई। माताजी ने हमें कई खूबसूरत उपहार भेंट किये जिनमें फूलों की आयल पेंटिग भी शामिल थी।

न्यूयार्क

न्यूयार्क शहर की तरफ सभी का ध्यान गया और सामाजिक कार्यक्रमों की तैयारी के लिए कई सहजयोगी वापस अपने शहर लौट आयें। न्यूयार्क में दो कार्यक्रम हुए जिनमें केवल

50 लोगोंने भाग लिया। पहले कार्यक्रम में कठिनाई हुई परन्तु दुसरे कार्यक्रम में कई उत्तम खोजी आये जिनमें काफी अछी चैतन्य लहरियाँ थी। यद्यपि यह घटना निरुत्साहक थी फिर भी न्यूयार्क के सामूहिक योगियों को प्रचार के नये साधन अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया। श्री माताजी ने कहा कि न्यूयार्क के लिए पोस्टर द्वारा प्रचार ज्यादा प्रभावशाली नही हैं। इसलिए दूसरे साधन ढुढ्ने होंगे। चूँकि न्यूयार्क में प्रतिरात 300 से अधिक कार्यक्रम होते है इसलिए यह निर्णय लिया गया कि नये प्रचार साधन के लिए किसी व्योसाईक सलाहकार को किराये पर लगाया जाय। श्री माताजी ने न्यूयार्क को सबसे मुश्किल जगह बताया, ऐसी जगह जहाँ सहजयोग की सबसे ज्यादा जरुरत हैं। पर यहाँ के लोग आत्मा के प्रति बिल्कुल निःचेतन हो गये है।

जबतक श्री माताजी अपने उड्डान का इन्तजार करती रही सप्तहान्त अनौपचारिक वार्तालाप में सप्ताह हो गया। जैसे योगीजन श्रीमाताजी के साथ व्यस्त हवाई अड्डे पर बैठे थे उन्होने कई योगियों को अपना व्यासाय और स्थान बदलने की सलाह दी। श्रीमाताजी ने फिर बाकी यात्रा के लिए प्रस्थान किया। हम जानते थे कि हमसे कई उन्हे सिनसिन्नाटी, टोरोन्टो, वैन्कोवर सेनडियागो या मियामी में मिलेंगे। जुलाई में युनाइटेड नेशन्स के विशेष "इन हाउस" अधिवेशन में भाग लेनेके लिए श्रीमाताजी की वापसी की आशा दिलमें लिए हुए यहाँसे न्यूयार्क के सहजयोगियोंने प्रस्थान किया।

केरन डी कोकर, बोस्टन

सिनसिन्नाटी

यहाँ के सहजयोगियों को पूजनीय श्रीमाताजीके दर्शनों की पूर्व अभिलाषा पूर्ति हुई। 14 जून को 12 बजे के कुछ पहले श्रीमाताजी सिनसिन्नाटी पहुँची और प्रसन्न योगी योगिनियों ने फूलों से उनका हार्दिक स्वागत किया। हम सब समय से पहले आश्रम वापस पहुँचे और फिर श्रीमाताजी का स्वागत शंखो की गूँज, आरती और माला पहना कर किया। श्रीमाताजी ने आश्रम की शांति और सन्नाटे के बारे मे कहा कि यह उनके लंदन के पहले के घर की याद दिलाता है।

दोपहर के भोजन के पहले श्रीमाताजीने हमारे साथ कुछ देर के लिए बातचीत की और न्यूयार्क के कार्यक्रमों की चर्चा की। श्रीमाताजी ने यह भी महसूस किया कि सिनसिन्नाटी में अच्छा कार्यक्रम होगा।

दोपहर के भोजन के बाद श्रीमाताजी अपने कमरे में विश्राम करने गई और ओहियो के योगी, बोस्टन, माइनी एवं न्यूयार्क से आये योगियों सहित शहर में सीसनगुड पेवेलियन,

जो सिनसिन्नाटी के इडन पार्क में स्थित है, गये। इस सुन्दर खुले थियटर को सभी योगी शाम के कार्यक्रम के लिए सजाने गयें। मंच सजाने का कार्यक्रम बहुत सुन्दर और एकजुट ढंग से हुआ, हर योगी ने कुछ न कुछ काम किया जिससे अंततः सबको खुशी हुई।

पुरे दिन, एक-एक कर हलकी बारिश हो रही थी और कई योगी पूजा के लिए किसी दुसरे उपयुक्त स्थान के विषय में पूछने आए। उन्हें आश्वासन दिया गया की पूजा के वक्त तक सारे बादल छंट जाएंगे और जिस तरह माँ के स्वागत के समय मौसम साफ हो गया था उसी प्रकार फिर से मौसम साफ हो गया।

माताजी कार्यक्रम के लिए करीब आठ बजे पधारीं। उन्होंने 200 व्यक्तियों के जनसमूह को बहुत ही साधारण सहज ढंग से परम सत्य की प्रकृति, जागृतता की जरूरत एवं ईश्वर द्वारा अपनी बुध्दि और चैतन्य को बढ़ाने के इस मौके के विषय में जानकारी दी। उन्होंने, अपने ज्ञान के आधार के महत्व, संत बनना कैसा होता है, आत्मा और इस नाटक के साक्षी स्वरूप के विषय में बताया। श्री माताजी ने, जनसमूह को जागृति प्राप्त होने के पश्चात, उसकी वृध्दि के उत्तरदायित्व का बोझ उठाने के लिए प्रोत्साहित किया।

माताजी के कहने पर चार लोगों ने प्रश्न पूछे जो काफी गहन और सामाजिक थे। उन प्रश्नोंमेंयह पूछा गया कि इतिहास में इस समय की क्या विशेषता हैं, मानवता तथा व्यक्तियों के खिलने के इस समय का क्या परिणाम है, जब कुंडलिनी ऊपर उठती है तो कर्मो को कैसे हटाती है। एवं किस प्रकार बच्चों को अपनी गहनता और शुध्दता खोने से बचाया जा सकता है जिससे वे पैदा हुए है।

जनसमूह मंच से कुछ दूर पर बैठे थे और कई लोग जरूरत से ज्यादा पीछे बैठे थे, इसलिए जागृति देने के पहले श्री माताजी ने उन्हें "थोडा सा आगे" आने को कहा। एकाएक, जैसे सभी में एकजुट इच्छा की लहर दौड़ी, सम्पूर्ण जन उठकर माताजी के सामने मंच के बिलकुल करीब आकर जमीन पर बैठे गये। यह दृश्य दिल को बहुत आनन्दित करने वाला था। श्री माताजी भी काफी प्रफुल्लित होते हुए कहीं, "ओह, ये सब यहाँ आ गये, देखो जरा, ये सिनसीन्नाटी है। सच .... ओह, कितनी बड़ी बात है, है न?" माताजी ने उनकी कुर्सी को भी मंचके आगे सिसकाने के लिए कहा ताकी वे उनके और करीब हो सकें। "कितने उत्साह के साथ", उन्होंने {माताजी} विस्मयचित होकर कहा", कितने सुन्दर लोग हैं,"

जागृति देने के उपरान्त श्रीमाताजी ने कहा कि अब कोई भी पेड़ या पत्ता नहीं हिल रहा है, अतः अब हवा बिलकुल नहीं चल रही है और अब हमें जो महसूस हो रहा है वह चैतन्य लहरीयाँ है। चारो ओर के वातावरण की मौनता पूर्ण रूप से परिपूर्ण थी कुछ भी हिलता हुआ नजर नहीं आ रहा था। जब माताजी ने पूछा की किन किनको चैतन्य लहरियाँ महसूस हुई तो इतने हाथ ऊपर उठे की माताजी आश्चर्य चकित होकर कहीं, " हे ईश्वर। ओह। ईश्वर तुम सबको आशीर्वाद दे। क्या जगह है सिनसीन्नाटी । क्या जगह। इतने सारे खोजनेवाले, मै आप सबको प्रणाम करती हूँ----। वाह। वाह।

कार्यक्रम के अंत मे सभी, माताजी से मिलने मंच पर आए। थोडे बच्चोने माँ को तुरन्त पहचान लिया। उत्तरी करोलिना से दो वैज्ञानिक भी आए हुए थे। माताजी ने उनसेउनके अनुसंधन के बारे में बात की जिसका विषय चेतना के विभिन्न अवस्थाओं मे मनुष्यके मस्तिष्क से निकलती हुई लहरों से संबन्धित था। वेलोग "सहज चेतना" पर अनुसंधान करने तथा उत्तरी केरोलिना में सम्मेलन आयोजित करने के विषय में काफी दिलचस्पी व्यक्त कर रहे थे। आश्रम वापस लौटने पर माताजी ने कहा की कार्यक्रम से और वहाँ आए हुए लोगों से वे काफी प्रसन्न थी। माताजी को विदा करने अगले दिन प्रातःकाल हम हवाईअड्डे गए। उड़ान की देरीके कारण, माताजी के साथ करीब एक घंटा बात करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस दौरान श्री माताजी ने व्यक्तिगत प्रश्नों के उत्तर दिये। माताजीने कहा की सहजयोग को कार्यवान्वित करने के लिए छोटे शहर ज्यादा आसान है और कुछ सहजयोगियों को उन्होने क्लिवलैंड, टिफ्फीन और ओहियो (जहाँ कई साल पहले माताजी गई थी) में कार्यक्रम आयोजित करने को कहा। श्री माताजी से बिछड़ते देखकर हम सब को बहुत दुःख हो रहा था परन्तु पिछले रात के कार्यक्रम से हम काफी खुश थे। माताजी के आशीर्वाद से सिसनगुड पैविलियन की पथरीली दिवार पर लिखी हुई निम्नलिखित मनोकामना की पूर्ति अब हो रही है :-

इनफ इफ समथिंग
फ्राम इवर हैन्डस हैव पावर
टू लिव ऐन्ड ऐक्ट ऐन्ड सर्व
दी फ्यूचर आवर

(अगर कुछ है तो काफी है क्योंकि हमारे हाथों में शक्ति है भविष्य में जीने, काम करने और सेवा करने की)

क्रियम वर्डसवर्थ

स्टोव ओलेनवर्ग, क्रैग विलियमसन, जान डी कोकर

टोरोन्टो

श्रीमाताजी ने टोरोन्टो में, 1983 में, स्वयंको आदिशक्ति के अवतार के रूप में घोषित किया था। इस साल उन्होने कहा कि यही यहाँ के सार्वजनिक सफलता का कारण था। अपने आगमन के पहले तीन सप्ताह के कार्य को तीन दिनों में कार्यरत कर निसंदेहही उन्होने स्वयं को फिरसे समय, स्थान और शक्ति की स्वामिनी सिध्द कर दिया। वर्न, लोरी, पवन और डिबोराइ की सहायता से टोरोन्टो के सामूहिक योगियोंने टोरोन्टो के सबसे अच्छे निर्माणित होटल "रायल यार्क" में श्रीमाताजीके ठहरने की व्यवस्था की। इस होटल का चुनाव वास्तव में अचेतन का चेतन होने का एक उदाहरण था। किसी दूसरे होटल की चर्चा करने पर विलियमने "रायल यार्क" नाम तीन बार लिया तो पवन ने पूँछा "तुम रायल यार्क क्यो कह रहे हो"। वहाँ का आरक्षण अधिकारी काफी उपकारक साबित हुआ और अंत में हमें एक रातके मूल्यमें दो रातों के लिए कमरा मिल गया जिससे हमें श्रीमाताजी के कमरों को सजाने का पर्याप्त समय मिल गया। इस दौरान महिलायें चद्दर, चीनी के बर्तन वगैरह खरीदने के लिए गईं और उन्होने पाया कि सभी कुछ के दाम बिल्कुल वाजिब थे। लिनन और हाथकी बुनी हुई कनाडा की लेस कवर से माँ बहुत प्रसन्न थी। वर्न और रोबर्ट गलियों में, टोरेन्टो के निवासियों को पर्चे बाँटे। यह कार्य भी हनुमान के हँसमुख स्वभाव और असीम शक्ति के कारण सफल हुआ। श्रीमाताजी के आगमन के कुछ समय उपरांत वहाँके रेडियो स्टेशन से एक महिला आई। उसकी आधे घंटे की मुलाकात करीब दो घंटे चली, अंततः उसकी जागृति के साथ समाप्त हुई। उसने कोलम्बिया में नशीली दवाओंके व्यापार और परमाणु मलवा पर लेख लिखे थे और थोडे भारतियों से भी मुलाकात की थी। उसके अनुसार उनके विचार सहजयोगसे काफी मिलते जुलते थे। उसके वार्तालापका विषय कुछ धनी और शक्तिशाली लोगोंद्वारा पैदा की गई संसार की जलवायुक समस्यायों की ओर था जो आम जनता में विप्लव फैला रही है। किसप्रकारसे सहजयोग से इन समस्यायों को रोका और दूर किया जा सकता है इसपर बातचीत हुई। मुलाकात के बाद यह महिला हृदय में मानवता के लिए काफी आशा लिए हुए प्रस्थान किया और उसने कहा कि मानवता को सूधारने के लिए हमारे इस आन्दोलन की सहायता करेगी और जो कुछ हो सकेगा लेख लिखेगी।

इसके बाद एक बहुत ही सफल सार्वजनिक कार्यक्रम हुआ जिसमे करीब 400 लोग आये थे और उसमे कई गहन खोजी थे जिन्होने श्रीमाताजी को तुरन्त पहचान लिया। श्रीमाताजी रात के एक बजे तक प्रत्येक व्यक्ति से मिली, बातचीत की और सुझाव दिये। अगले दिन हवाई अड्डे पर

कई सहजयोगियों को आधे घंटे तक बातचीत का सौभाग्य और आनन्द प्राप्त हुआ। यह सुख और शांती का अनुभव श्री माताजी के आनन्द एवं अगले वर्ष फिर आने के आश्वासन का प्रतिबिंब था। प्रस्थान के पहले ब्रम्ह चैतन्य के विषय में बात करते हुए श्रीमाताजीने कहा "तुम्हे सिर्फ इससे एक होना है"

पवन किटली, विलियम ब्रिडेन

वैन्कोवर (कनाडा)

16 जून, सोमवार के दोपहर को श्री माताजीने वैन्कोवर की सुन्दरता का अवलोकन किया। श्री माता जी के होटल से लाये हुए गुलाब के फूलों से लदे हुए हम टोरोन्टो से वैत्कोवर 20 मिनट पहले पहुँचे और आशा से भरपूर योगीजन हवाई अड्डेपर दौड़ रहे थे। 6 सालों बाद श्री माताजी की यह यात्रा वैन्कोवर के सामूहिक सपने की मूर्ति थी। श्री माताजीने अपने स्वागत के लिए प्यार तथा आश्रम के सजाने का काम देखकर प्रसन्न हो उठी। उन्होने कहा कि उस दोपहर में उनके प्यार के कारण, जिससे उन्होने कमरा सजाया था, उन्हे बहुत अच्छी और गहरी नींद आई। श्री माताजी जब आराम कर रही थी, डा॰ब्रियेन केन्स इन्गलैंड से पधारे।

पहली शामको माताजी ने हमारे साथ रात का भोजन ग्रहण किया और आइन्स टाइन, जो कि असल मे फैकेस्टाइन थे के विषय मे हँसी मजाक किया-पश्चिमी अहंकार की मूर्ति। पी एच डी लोगों की भी बाते हुई जो एम॰य॰डी॰(मैड-पागल)थे। श्री माताजी ने बताया की अनुशासन, त्याग एवं समपर्ण सहज योगियों के गुण हैं जब हम ये गुण (गुणों की मूर्ति) बन जाते हैं तो देवगण हमारे समर्पित और साथी हो जाती हैं। श्री माताजी की दया और कृपा हमें हर स्थिती में आशिर्वाद प्रदान करती है। सबका श्री माताजीसे परिचय कराया गया सार्वजनिक कार्यक्रमों पर वादविवाद हुए और मध्यरात्रिको हम स्वर्गीय निद्रा ग्रहण करते थे।

शनिवार को प्रातःकाल महाकाली पूजा आरम्भ हुई। श्री माताजी ने कहा कि सहज योग की मूर्ति बनने के लिए शुद्ध इच्छा तथा गहराई के गुणों का होना जरूरी है और यह भी बताया कि किस तरह संगीत और विडीयो उत्तरी अमेरिका में सामूहिक रूपसे कार्य करने मे सहायक हो सकते हैं। पुरुषों ने माताजी की पूजा की जो बहुत तीव्र और संक्षिप्त थी। श्री माताजी ने कहा कि इन गुणों को अब सहजयोग में समा जाना चाहिए। जैसे उनके नामों का उच्चारण हमने किया श्री महाकाली ने बाये तरफ की बाधा हँसते खेलते विनाश कर दिया।

पूजा के तुरन्त बाद सबका ध्यान संगीत विद्यालय में हुए सार्वजनिक कार्यक्रम की ओर आकर्षित हुआ। डा॰केन्स ने जन समूह संबोधित किया। उन्होने बीजों की उपयोगिता तथा दूसरे

ढंग की जीवन पध्दती के विषयों पर अपनी निपुणता से सारे कनाडा निवासी खोजियों का मन हर लिए। डा· केल्स व्यावसायिक, गतिशील एवं विनोदी थे और उन्होने सहज रूपसे श्रीमाताजी के आगमन के स्वागत के लिए सारे जनसमूह का नेतृत्व किया।

श्रीमाताजी ने खड़े होकरही सबको संबोधित किया। लाउड स्पीकर की थोडीसी माया ने अहंकार को उतारा और सभी का ध्यान सोचने के बजाय सुनने को केन्द्रित किया। श्रीमाताजी के मीठे असीमित प्यारने पर्वतों समान संस्कारो को भी पिघला दिया और करीब 50 लागों को जागृति मिली। श्रीमाताजीने कई घंटे तक लगातार हर एक पर काम किया और खोजनेवालों के गुणोंसे वहुत पसंद थी।

रविवार की सुबह हम श्रीमाताजी के साथ हवाई अड्डे गये वहाँ पहुँचने पर हमने पाया कि श्रीमाताजी का वैनिटी केस गायब था। डेढ़ घंटे का दुबारा यात्रा हमने 45 मि·में·तय किया परन्तु हवाई अड्डे पर गाड़ी खड़ी करते समय अंततः पुलिस ने हमें पकड़ लिया। हमारे समझाने पर की हमारी माँ अमेरिका जा रही है और ये कुछ महत्वपूर्ण कागज थे, उन लोगोंका ध्यान माताजीके बैज {फोटो} पर केन्द्रित हुआ। वे कुछ नरम हुए और हमें तीन सिगनल पार करने तथा 100 मील प्रति घंटे की रफ्तार से चलनेके लिए सिर्फ चेतावनी दी और चमत्कारपूर्वक हमें छोड़ दिया। जय श्री गणेश । जय श्री हनुमान । श्रीमाताजी हमारी तरफ आई, बैग ली और तब हमने उन्हे इस माया के विषय में बताया तो हँसने लगी।

श्रीमाताजी के विदाई के अंतिम शब्द थे "ध्यान की गहराई में उतरिये और सामूहिक रहिए"। श्रीमाताजी के विमान के छूटते ही हम तुरन्त कारमें, 100 मील प्रति घंटे की रफ्तार से सनडियागो की तरफ बढे जो की इस अविश्वसनीय यात्रा का अगला चरण था। अमेरिका धन्य हुआ

वर्नोन्स वैन्कोवर

सेनडियागो

श्रीमाताजी 18 जून पितृ दिवस पर सेनडियागो पहुँची। उसी शाम "ओरगन पेविलियन" जो एक खुला रंगमंच है, में पहला सार्वजनिक कार्यक्रम हुआ। श्रीमाताजी के छोटे भाषण और संगीत के उपरांत करीब 700 लोगोंने शाम के शांत वातावरण में चैतन्य लहरियों को महसूस किया। भाषणने खोजियों की सत्य पहचानने की योग्यता और अज्ञानता से विनाश की ओर कदम उठाने पर ध्यान केन्द्रित किया।

अगली सुबह श्री महाकाली, जो राक्षसों को नाश करनेवाली है के रूप में श्री माताजी

की पूजा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ/ अपनी असीमित करूणा में उन्होने कहा कि पूजा की तैयारी पूरे जोर और सावधानी से करे। इससे हमें श्री माताजी के महान कार्य का पूर्ण रूपसे अहसास हुआ।

पूजा का आरम्भ श्री गणेश पूजा से हुई जो श्री महाकाली के बच्चे है और जो इडा नाडी के मूल आधार है। पूजाके दौरान जब श्री महाकाली के नामों का उच्चारण किया जा रहा था, कई बार श्रीमाताजी मुस्काई या हँसी और हमने श्री महाकाली को इस सृष्टि की भावना और असीमित आनन्द के रूप में देखा।

पहले सभी पुरूषोंने श्रीमाताजी के चरणों को धोये {दोबार} फिर सब महिलायों ने भेट चढाई। कुछ आश्चर्यजनक रूपसे श्रीमाताजी को दो जोड़े सोने के गहने भेट किये गये जिन्हे उन्होने एक साथ पहना, चरणों मे सोने के पायल कवच के समान दिख रही थी। श्रीमाताजीने हेलमेट स्वरूप मुकुट धारण करते समय "हे आदि माँ" गाने को कहीं। राक्षसोंकी मुंड माला पहनकर अनेक प्रकार के अस्त्रों, शंख, चक्र, गदा, कुल्हाडी, तलवार, फर्सी, धनुष वगैरह से घिरी हुई, माताजीने हमें पूर्णरूपसे मंत्रमुग्ध कर दिया। शायद अनकही प्रार्थना के अनुरोध पर ही माताजीने कहा "क्या मैं अपने सारे हाथों का प्रयोग करूँ"। सारे शस्त्रों को धारण किये हुए श्रीमाताजी के नेत्रजड़ित एवं लाल हो गये और उनका दर्शन करना मुश्किल हो गया। हमें ऐसा लगा मानो किसी छोटे जानवर का ध्यान पूरी तरहसे उसके प्रिय स्वामी के ऊपर केन्द्रित है जबकि मालिक उसकी समझ के बाहर क्रोधित हो।

पूजा की समाप्ति पर सभी सहजयोगियों को सारे नकारात्मक लोगों और शक्तियों के नाश के लिए प्रार्थना करने को कहीं| यह बहुत बडे राहत की बाद जब हम माथा टेकने झुके तो श्रीमाताजीने कहा कि इतनी तीव्रता से "इच्छा करो, इच्छा करो" कि शुध्द इच्छा शक्ति अधिक गहनता में रूपांतरित होने को उत्साहित हो सके।

पूजा के पश्चात श्रीमाताजीने कार्यक्रमों की सफलता और सहजयोग संस्थाओं के लिए पूरे हृदयसे काम करनेकी महत्ता को समझाया और कहा कि पिछले शाम के कार्यक्रम का प्रचार अच्छी तरह से किया गया था और कोशिश जोश में परिपूर्ण थी। उन्होने कई बदलाव सुझावित किये और अमेरिका में {सहजयोग की} उन्नति के लिए रास्ता साफ कर दिया। वर्न क्रिस कनाडा के और करन खुराना अमेरिका के नेता होंगे,, डेविड डनफी सेनडियागो की देखभाल करेंगी, करोलिन वेन्स न्यूयार्क की और जोआन डी कोंकर बोस्टन की। लॉसएन्जलीज और सेनफ्रांसिसको नये क्षेत्र होंगे, जिनकी बढोत्तरी की जाएगी।

श्रीमाताजीने कहा कि पश्चिम की रंग भेदनीती बहुत बड़ी समस्या है, जो इसे अपनाये हुए हैं वे सहजयोग में टिक नहीं सकते। चर्म-गहन सहजयोगियों को आज्ञा नहीं है। उन्होने कहा कि अगर ऐसी कोई भावना हमारे अन्दर है तो इसे दूर करें। "मेरा चेहरा साफ रंग का हो सकता है परन्तु मेरे हाथ काले है" श्री महाकाली का यह भी एक नाम है कि उनके हाथ काले है।

19 जून के दूसरे सार्वजनिक कार्यक्रम में श्रीमाताजी के आगमन तक डेविड स्प्रीओने सहजयोग के विषय में लोगों को जानकारी दी। भाषण के उपरांत श्रीमाताजीने करीब 1600 लोगों को "जागृति" दी ।इसके बाद उत्साहित तथा अनुरागित खोजियोंने श्रीमाताजी से एक एक करके मिले, प्रणाम किये और सेनडियागो में पधारने के लिए धन्यवाद दिये। श्रीमाताजी खोजी जनोंकी उत्तमता पर बहुत खुश थी और उन्होने बताया कि सेनडियागो का अर्थ है "देवताओं का शहर"। भाषण देते समय श्री माताजीने आस्वासन दिया कि सहजयोग का आठ सप्ताह का पाठयक्रम होगा। उपरांत कार्यक्रम में करीब 80 लोगों ने भाग लिया जो कि बहुत ही अच्छा तथा उत्साहवर्धक था। श्रीमाताजी ने 20 जून को दो संवाददाताओं से दो घंटे की भेट वार्ता की जिनको अन्त में आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हुआ। उनमें से एक महिला लेखिका थी तथा दूसरी स्थानीय साप्ताहिक पत्रिका से थी। श्रीमाताजी इस भेट वार्ता से बहुत सन्तुष्ट थी तथा उन्होने बताया कि पाश्चात्य समाचार पत्र का यह सबसे अच्छा व्यवहार था। भेट वार्ता के बाद श्री माताजी अपनी पौत्री तथा कुछ सहजयोगियों के साथ खरीदारी के लिये गयी ।अमेरिका की नाभी स्वच्छ करने के लिए।| करन और डेविड ने इस कार्यक्रम की सफलता के उपलक्ष्य में श्री माताजी को पीजा के रात्रि भोज के लिए ले गये। श्रीमाताजी ने प्रेमपूर्ण मुस्कान के साथ कहा कि ऐसा स्वादिष्ठ पीजा उन्होने कभी नहीं खाया था। खरीदारी के बाद श्रीमाताजी का स्वागत उनके निवास स्थान पर संगीत के साथ किया गया। श्रीमाताजीने बैठने के बाद, नये सहजयोगियों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए, इसपर बहुत ही हार्दिक वार्ता की।

उपरांत कार्यक्रमों के लिए श्री माताजी का सुझाव

श्रीमाताजीने सेन्डियागों के उपरांत कार्यक्रमों के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये :-

1. प्रत्येक सहजयोगी को एक अच्छा उदाहरण तथा गरिमा प्रस्तुत करना चाहिए।

2. सामुहिकता की शक्ति दिखाइये : सहजयोगियों के बीच में कोई वाद-विवाद नहीं होना चाहिये। उदाहरण स्वरूप जब आप लोग किसी चक्र के पकड़ जाने के विषय में बात कर रहे

हैं तो एकमत होना चाहिए। इन लोगों को पति - पत्नी के बीच के मनमुटाव का अनुभव नहीं होना चाहिए।

3. सभा में बच्चे नहीं आने चाहिए।

4. सहजयोगियों की सभा में आदमियों और औरतो को अलग 2 समूह में बैठकर, सहजयोग के अनुभव को आपस में बाँटना चाहिए। सहजयोगी लोग उनको श्री माताजी के तथा उनके चमत्कार के विषय में बता सकते है तथा उनको आश्चर्यचकित फोटो दिखा सकते है।

5. नये लोगो के विषय में सब कुछ जानने की कोशिश करें। उनको बहुत अच्छी तरह समझे और जाने।

6. अगर नये लोग अपनी समस्या बताये तो उनके साथ दया और समझदारी दिखाये। आप उन्हे बतायें कि हमारे साथ भी ऐसी समस्या थी, चाहे पूर्ण सही हो या न ।

7. उनको भूत प्रेत तथा नकारात्मता के विषय में बाते करके मत डराओं।

8. अपने आपको बंधन मुक्त दो। उनकी कुन्डलिनी जागृत करने या समझाने के पहले उनको बंधन दो।

9. नये लोगों के सामने न हँसे। वे तिरस्कारित महसूस कर सकते है।

10. श्रीमाताजी आदिशक्ति है उनको शुरू के दिनों में ही न बताओ।

11. चाय पिलाओं तथा मित्रता और स्नेह का वातावरण बनाओ।

श्रीमाताजीने 2। जून को लास एन्जेल्स की यात्रा की। उन्होने {माताजी} संध्या में संगीत का कार्यक्रम रखा, जिससे लास एन्जलीस के कुछ नये सहजयोगियों ने अतिसुंदर महाराष्ट्रीयन लोक शैली में गाना गाया जिसमें प्रत्येक देवता का कुण्डलिनी जागरण के लिए आवाहन किया गया था, जिससे सब लोग आनंदित हो उठे। जैसेही गायक लोग श्री माताजी के चरण स्पर्श के लिए झुके, उन्होने उनकी पीठ थप थपाया। श्रीमाताजीने उन सहजयोगियों को उर्दू जानते है, एक भारतीय सहजयोगीद्वारा लिखित कविता की टेप जिसमें माताजी को आदिशक्ति के रूप में बताया है और श्रीमाताजी को अतिपसन्द है, सुनने के लिए कहा। दूसरी सुबह श्री माताजी हवाई अड्डे के लिए प्रस्थान करते समय विदाई के शब्द इस प्रकार कहे :-

"ध्यान करो ध्यान करो, ध्यान करो"

लाइस वान्गे और जेनिफर सेटे {सेन्डियागो}

मियामी -

श्रीमाताजी वायुयान द्वारा लासएन्जलीस से 22 जून को मियामी पहुँची जहाँ पर

उन्होने पिछले साल की यात्रा के समय, कोलम्बिया जाते समय, जो चैतन्य लहरियाँ फैलाई थी, उसने उस स्थान को साफ कर दिया था। श्री माताजीने यात्रा के दौरान बाबेटा से मिलने की इच्छा प्रकट की थी और बाबेटा अपने आप कार्यक्रम बनाकर अन्तिम क्षणों मे वहाँ पहुँच गयी। हालाकि संपूर्ण पूर्वी तट मौसम की खराबी से बन्द था जो कि श्रीमाताजी के गले में जो कुछ महसूस हो रहा था उसकी प्रतिक्रिया थी, और बाबेटा को न्यूयार्क हवाई अड्डे पर तीन घंटे तक इन्तजार करना पड़ा परन्तु वह फिर भी समय पर पहुँच गयी।

डा॰बोगडन इग्लैण्ड से इसी कारणवस देर से पहुँचे। वे बहुत आश्चर्यचकित थे कि किस प्रकार एक पुलिस आफिसर नें रात्री में केन्स के मध्य में पहुँच कर जहाँ पर न तो फोन या सडक है यह सूचना दी कि आपकों आपकी माताजी (श्री माताजी) आपसे अमेरिका में मिलना चाहती है। उन्होने उसी समय सब इन्तकाम किये और वहाँ पहुँचे।

पैट्रिक फोर्ट लाउडरडेल (मियामी के नजदीक) के एक अकेले सहजयोगी थे, इसीलिए पूर्वी और पश्चिमी तट के बहुत से सहजयोगियों ने आकर उनकी सहयता की। सुबह के समाचारपत्र में बिजली की एक लकीर का चित्र छापा था जिसके विषय में पेट्रिक ने बताया कि माताजी के पहुँचने के पूर्व, यह बार बार दिख रही थी। इस बिजली की लकीर और बिजली तथा गड़गडाहट के साथ वाली आंधी ने जगह को साफ करने में तथा माताजी के आगमन में सहायता की। उन्होने माताजी को मियामी की समस्या (ड्रग की खास तौर से) के विषय में बताया जो श्री माताजी के ध्यानद्वारा हल हो सके। (बाद में 5 जुलाई को न्यूयार्क समाचार पत्र में प्रकाशित हुआ कि फोर्ट लाउडर में पुलिस ने 200 ड्रग सम्बन्धित लोगों की धर पकड की है)। शाम का कार्यक्रम रामदा इन होटल मे आयोजित किया गया था जिसमे करीब 150 लोगों ने भाग लिया तथा आत्मसाक्षात्कार प्राप्त किया। उनके भाषण के उपरान्त एक कटरपंथी ईसाई ने बाइबल से बिना समझ के उदाहरण देने लगा परन्त श्री माताजी ने जोरदार और दृढ विश्वास के साथ क्राइस्ट के विषय मे बताया, उससे वह पूरी भीड़ दंग रह गयी और सब लोगों ने यह देखकर खूब तालियाँ बजाई। काफी लोगों को आत्म साक्षात्कार प्राप्त हो गया जिनको आत्मसाक्षात्कार की प्राप्ति नहीं हुई वे लोग मंच के ऊपर आकर प्राप्त किया तथा माताजी को धन्यवाद दिया।

बोगोटा

श्रीमाताजी का बोगोटा में पहुँचने पर हवाई अड्डे पर जोरदार स्वागत किया गया। करीब 50 सहजयोगी जो श्रीमाताजी के कार्यक्रम में पिछले साल भाग लिए थे, उनका स्वागत करने को हवाई अड्डे पर एकत्रित थे। उन्होने श्री माताजी के स्वागत मे कोलम्बियन लोकनृत्य

पेश किये। श्री माताजी ने बताया कि यह लोकनृत्य महाराष्ट्र के लोकनृत्य से मिलता जुलताहै। पूजा, जो रविवार दोपहर को होनेवाली थी, समाचारपत्र दुरदर्शन से भेटवार्ता होने के कारण, दूसरे दिन के लिए स्थगित कर दी गई। यह कार्यक्रम बहुत अच्छा हुआ और उन्होने जोश तथा अन्य द्वारा गाये हुए भजन का अभिलेख (रिकार्ड) किया। साढ़े चार मिनट का अभिलेखित कार्यक्रम राष्ट्रीय आकाशवाणी पर मुख्य समाचार समय मे प्रसारित हुआ जिसके अंतमे सार्वजिक कार्यक्रम के समय और स्थान की घोषणा की गई। हाल खचाखच भरा हुआ था तथा करीब 1100 लोगों ने जागृति ली जिनमें से करीब 80 लोगोंने माताजी के " उपरांत कार्यक्रम " मे भाग लेने के लिए दोपहर के बाद छुट्टी ली। उस दिन कोलम्बिया में सहजयोग की बढ़ो-तरी के लिए गणेश पूजा कीगई ।

ब्राजील : -

डुइलो ने सलवाडोर तथा ब्रासिल के कार्यक्रम का आयोजन किया जिनमे क्रमशः 600 और 1500 लोगों ने भाग लिया। सलवाडोर मे श्री माताजी ने डुलियों के आतिथ्य का आनन्द उठाया।

ब्राजिला ब्राजील की राजधानी है जहाँ पर 800 पंथ (क्लटस) और धर्म है। सहजयोग 801 वाँ (108 का उल्टा) पंजीकृत हुआ। समाचार पत्र मे अच्छे लेख लिखे गये और वहाँ की सरकार ने श्री माताजी के दौरे मे सहायता की।

रियो में ब्रुनो तथा जुआन (आस्टेलिया का सहजयोगी एक अर्जेन्टेनियन) ने कार्यक्रम का आयोजन किया। श्रीमती ब्रुनो जापानीय सभ्यता और दक्षता की एक अच्छी उदाहरण थी और श्री माताजी ने अपने अपने पड़ाव के दौरान उनके द्वारा की गई अच्छी सेवा के लिए धन्यवाद दिया। अगले साल श्री माताजी उरुगवे, चिली और इक्वेडर की यात्रा करेंगी।

श्री माताजी ने कहा कि डुलियो तथा ब्रिगेटे ने सहजयोग में ज्वलंत नेतृत्व का उदाहरण प्रस्तुत किया है। उन्होने पूरी निष्ठा और आस्था के साथ, अपने खर्च की परवाह न करते हुए, दक्षिणी अमेरिकी की यात्रा की सफलता के लिए काम किया। डुलियो अपनी वफादारी और अथक प्रयत्न के लिए आशिर्वादित हुए जिससे कि ब्राजील में दैवत्य का जोरदार आगमन हुआ और उनको एक होटल बनाने के लिए 50 लाख डालर का ठेका मिला।

न्यूयार्क की पुनः यात्रा -

श्री माताजी जुआने के साथ 4 जुलाई की सुबह को न्युयार्क पहुँची और संसारभर के सहजयोगियोने उनका स्वागत किया। उन्होने हाथ के बने चमड़े के सुन्दर उपहार ब्राजील से लाई थी, महिलाओ

के लिए हाथ का झोला और पुरुषों के लिए ओवर नाईट बगै।

दोपहर के बाद मैनहाटन के भिन्न-भिन्न निवासियों को जागृति दिलाने का कार्यक्रम श्री पुरेन्द्र चटर्जी के निवास पर आयोजित किया गया।

शाम का समय यू एन प्लाजा होटल के एक कमरे में, जहाँ से हडसन दिखाई देता है, व्यतीत किया। श्री माताजी के पूजनीय संसर्ग में आतिशबाजी की प्रदर्शनी से हम लोगों का स्वागत किया गया, उन्होने ने सहजयोगियों के साथ रहना प्रसन्द किया और न्यूयार्क की समस्या और उसके समाधान के संक्षिप्त भाषण दिया। बातचीत टेप पर प्राप्त है। यू·एन·का कार्यक्रम दोपहर के बाद 1230 से 1500 बजे तक हुआ। 30 में से ज्यादातर राजनीतिक दूतोंने, जिन्होने कार्यक्रम में शामिल थे, उपरांत कार्यक्रम के लिए अपना नाम लिखवाये। शाम को श्रीमाताजी अपनी पौत्री, आराधना के साथ यू के {इग्लैन्ड} वापस आ गई, इस तरह सफल तथा चक्त्रात पूर्वा अमरीकी यात्रा समाप्त हुई।

ऑस्ट्रेलिया में रेडियो सहज

घूपपूर्ण ब्रिसबेन में श्रीमाताजी की कृपासे वात्सविक उत्साहपूर्ण चीजे हो रही है। सहजयोगियोंद्वारा दो कार्यक्रम रेडियो 4 जेड जेड जेड {दक्षिणी क्वींसलैन्ड में प्रसारण का नौजवानों का एक स्टेशन} पर प्रसारित होनेवाले है या हो रहे है। हर शुक्रवार दोपहर बाद 2·30 बजे आधे घंटे के कार्यक्रम "बिग वाइडवर्ड जासन कोपेनलैन्ड के बिदेशी मामले" और "आन्तरराष्ट्रीय संबंधो का पुनःदर्शन"। इससे श्री सी·पी·श्रीवास्तव के गणपतिपुले के पिछले क्रिसमस के भाषण, जिसमें उन्होने बताया कि दुनिया में सब जगह शांति बढ रही है, का आंशिक अंश प्रसारित हुआ।

आंशिक रूप से कार्यक्रम के कारण हम लोग रेडियो स्टेशन से सहजयोग के दूसरे आधे घंटे खंड के साप्ताहिक कार्यक्रम के लिए संबंध बनाये हुए है। इस {कार्यक्रम} के लेखन तथा संक्षेप का कागज पर लिखने के लिए हम पहले से व्यस्त है। इसका नाम "21 वी शताब्दी की उड़ान" होगा, जो सभी धार्मिक तर्क वैज्ञानिक, नैतिक, संसार के इतिहासिक तथा दूसरे वर्णन करेगा और इस तरहसे नियोजित होगा कि सहजयोग को उच्च कोटि का प्रसारण प्रदान करेगा। हमारी इच्छा है श्री माताजी के सितम्बर के दौरे के पहले यह कार्यक्रम चालू रहे।

दुनिया के दूसरे सहजयोगी इसकी मदद कर सकते है। अगर किसी के पास कुछ {हाँ, आपके पास है लाभदायक पदार्थ है तो हमे सब कुछ चाहिए जो मिल सके। दो खास जरूरते है - जासन के कार्यक्रम के लिए दुनिया के मामले का सामान चाहिए, इसलिए अगर किसी के पास टेप पर या लिखित माताजी का {या सर सी पी का} भाषण हो, जो इस विषय से

संबंधित हो सामाजिक उत्थान और पृथ्वी के देशों का चक्रों से संबंध वर्णन सहित हो, तो उसके प्रतिलिपि का अत्याधिक स्वागत होगा। और 21 वी शताब्दी के लिए कोई भी लिखित विचार श्रीमाताजी के शब्दों का जो रिकार्डेड या प्रिन्टेड हो या न हो परन्तु जो कि पूर्ण लेख रूप मे बनाया गया है इन सभी का पूर्णरूप से स्वागत होगा।

4 जेड जेड जेड नवयुवकों का स्टेशन है और हमारा संड (स्लाट) दिन में है, हम इसे तीव्र गतिशील तथा अपैरिचारिक रखना चाहेंगे परन्तु हम लोग गहन अनावरण और व्याख्या जो सब तरह के अच्छे चैतन्य लहरी के संगीत तथा खोजी संदेश युक्त हो, को देने वाले है। इसलिये कृपया उत्पादन विभाग की सहायता करे :- जासन कोपलैन्ड 29 हाघटन स्ट्रीट, रेड हिल, ब्रिसबेन, क्वीन्सलेन्ड 4059 आस्ट्रलिया। टेल (7) 369 8849.

हमारी मनोकामना है कि श्री विश्वमाया चैतन्य लहरी को आकाशवाणी पर रखने के हमारे प्रयत्न को मार्गदर्शित तथा आशिर्वादित करे और हमारा काम श्रीमाताजी को आदिशक्ति के रूप में औतम मान्यता दिलाने में मदद करे और पूरी दुनिया को उसकी स्वतंत्रता के संदेश को तीव्रतासे प्रसारित करने में, परिणित हो।

जासन कोपलेन्ड, आस्ट्रेलिया

महत्वपूर्ण बात :-

माँ ने सहस्त्रार 5 मई 1970 में बोर्डी से 7 कि.मी. उत्तर में नारगोल (भारत) में खोला था।